Vol 6, Issue 3, 2023 **Impact Factor: 5.099** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2023.6.3.6114

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को देवी के रूप में पूजने की परंपरा: ऐतिहासिक और आधुनिक दृष्टिकोण

मोनिका बोदरा (Monika Bodra)
शोधार्थी
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय, मुण्डारी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

*** संवाददाता लेखक:** मोनिका बोदरा,
Email: monikabodra0729@gmail.com

गरिमामय: भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को देवी के रूप में पूजने की परंपरा

भारतीय संस्कृति में स्त्रीयों के नाम के साथ देवी लिखने और संबोधित करने की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है। भगवती देवी, सरस्वती देवी, कमला देवी इत्यादि नाम इस बात के प्रतीक है की हिन्दू विचारधारा में नारी को देव श्रेणी की सत्ता रूप में स्वीकार किया गया है। ऐसा अनायास ही नहीं हुआ। इस प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए नारियों ने चिरकाल से गहन तपश्चर्या की है। उसने अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के चरम विकास द्वारा ही यह गौरव प्राप्त किया है।

लोक कल्याण की विधायिका, पथ प्रदर्शिका और संरक्षिका शक्ति का नाम ही देवी है। अपने इस रूप में भारतीय नारी आज भी उन प्राचीन गुणों को धारण किए हुए है, जिनके द्वारा अतीतकाल में उसने समाज के समग्र विकास में भी योगदान दिया था। यद्यपि वह तेजस्विता आज धूमिल पद गयी है, तथापि उस पर पड़े मल-आवरण के विक्षेप को हटा दिया जाये तो नारी सत्ता अपनी पूर्ण महत्ता को फिर से ज्यों की त्यों चरितार्थ कर सकती है।

स्त्रीकयाँ अपनी सर्वोपरि मार्गदर्शक और कल्याणकारक गुरु के रूप में प्रतिष्ठा की पात्र है, वह पुत्र के लिए माता का स्थान पिता से बढ़कर है, क्योंकि वहीं उसे गर्भ में धारण करती है, अपने रस, और शरीर से ही नहीं भावनाओं और संस्कारों से भी पालन-पोषण करती है। इस लिए उसे पुत्र से बढ़ कर और कोई प्रिय नहीं। अतएव मनुष्य मात्र का यह कर्तव्य हो जाता है की वह परम आध्यात्मिक शक्ति के रूप में "माँ" को प्रतिष्ठा प्रदान कर प्रत्येक नारी में भाव वत्सला नारी का रूप देखे। पितुरतयधिका माता गर्भधारण पोषनात। अतोही त्रिषु

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

लोकेषु नास्ति मातृ समो गुरुः । 'ब्रह्मपुरान में व्यास संवाद के रूप में एक आरव्ययिका आती है जो व्यास जी जाबालि को बताते हैं।

नास्ति पुत्र सम प्रियः । उस एपुत्र से बढ़कर और कोई प्रिय नहीं। अतएव मनुष्य मात्र का यह कर्तव्य हो जाता है की वह 'परम आध्यात्मिक शक्ति के रूप में माँ को प्रतिष्ठा प्रदान करें। प्रत्येक नारी भाव वत्सला नारी का रूप है। माँ के बाद नारी का दूसरा रूप "पत्नी का सहधर्मिणी का है। इस रूप में उसे सबसे बड़े विश्वासपात्र मित्र की संज्ञा दी गई है। जीवन की कठिन परिस्थितियों में जब संसार के अन्य सभी लोग साथ छोड़ जाते हैं, उस संपत्ति का विनाश हो जाता है, शरीर रोगी और निर्बल हो जाता है, उस स्थिति में भी सहनशील पत्नी ही पुरुष का साथ देती है और उसकी हर कठिनाई में और कोई योगदान भले ही न बन पड़े, किन्तु पुरुष के मनोबल, उसकी आशा और संवेदनशीलता को बल प्रदान करती रहती है। 'नास्ति भगिनी समा मान्या अथार्य बहन के समान सम्मान देने वाला और कोई नहीं। इस रूप में नारी ने पुरुष को बेह प्रदान किया है उससे हमारे सामाजिक संबंध और जातीय बंधन सुदृढ़ हुए है। भारतीय वीरों को बुराइयों से लड़ने की प्रेरणा देने वाली, उनके गौरव पूर्ण मस्तक का तिलक करने वाली बहन का संबंध आज भी कितना मधुर है, इस बात को रक्षाबंधन पर्व पर हर भारतीय अनुभव किया करता है।

भाई और बहन के मधुर रिश्ते में एक विचार मेरे मन में आया है जो मैं कुछ पंक्तियों में व्यक्त करती हूँ।

ऐ रब, मेरी दुआओं में असर इतना रहे,
मेरी बहन का दामन हमेशा खुशियों से भरा रहे।
बहना तेरी हर गम को अपना बनाऊँगा,
खुद रो कर भी तुझे हह्माऊंगा।

बहनें जीवन के बगीचे में फूल की तरह होती है,
बहन का रिश्ता कुदरत का अनमोल रिश्ता होता है।
जो हो तो जीवन में तमाम रंग मुकम्मल हो जाते है,
और अगर न हो तो अधूरापन महसूस होता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

बचपन में शरारत करने का इरादा न होता,
दीदी! तुम न होती तो बचपन इतना प्यारा न होता ।
खुशकिस्मत होती है वो बहन जिसके सर पर भाई का हाथ होता है,
हर परेशानी में उसके साथ होते हैं।

लड़ना झगड़ना फिर प्यार से मनाना,
तभी तो इस रिश्ते में इतना प्यार होता है।
एक सच्चीश बहन आपके साथ खड़ी होगी।
प्यार में यह भी जरूरी है,
बहनों की लड़ाई के बिना जिंदगी अधूरी है।
याद आता है अक्सर वो गुजरा जमाना
तेरी मीठी सी आवाज में भाई कहकर बुलाना
ऐसी है भाई बहन का रिश्ता ।

कन्या के रूप में नारी घर की शोभा है वह अपने आमोद-प्रमोद से गृहस्थ जीवन में जो सरसता लाती है, वह अपेक्षाकृत पुत्र नहीं ला पाते। कन्या पुत्र की अपेक्षा कहीं अधिक भावनाशील होती है। अतएव उससे मिलने वाली नेहधारा का मूल्य और महत्व बहुत अधिक है। अपने इन चारों रूपों में अतीतकालीन भारतीय नारी पुरुष वर्ग के साथ जो उपकार किए है, उनकी तुलना किसी भी दैवी सत्ता के साथ सहर्ष की जा सकती है। उसमें उसका पलड़ा भारी ही बैठेगा। अतएव उसका देवी कहलाना प्रत्येक दृष्टि से उचित और न्यायपूर्ण है। उसकी इस गरिमामय को हमें पूरी-पूरी प्रतिष्ठा भी देनी चाहिए। " अनेक वैदिक साहित्यकारों ने भी कन्या के महत्व को माना है तथा उसकी महत्ता और प्रतिष्ठाठी स्वीसकार कह है। महाभारत काल में तो कन्या में लक्ष्मीष का निवास माना है।" भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चाहे वो नारी माँ का रूप हो या पत्नी और बहन और बेटी का रूप हो। वैदिक काल में समाज में नारी के प्रति बड़ा आदर भाव था। परिवार की प्रमुख संरचना विवाह का उद्देश्य केवल वासना- पूर्ति न होकर गृहस्य- धर्म का पालन, धर्मष्ठान, यज्ञ सम्पादन और दाम्पत्य जीवन द्वारा श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति था । घर गृहस्थी में नारी की प्रधानता थी। परिवार के सभी गतिविधियों के केंद्र

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

में नारी थी। कन्या में ही धन की देवी लक्ष्मी का निवास माना जाता है। कविवर ग्रुप ने भी अपनी लेखनी से आर्य स्त्रीयों के स्थानों को पुरुष समाज में निर्धारित करते हुए माना है की वे सदगृहस्थी की वाहक दैवीय शक्ति की समान थी। उन्हीं के शब्दों में –

"केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत को गर्व था,
गृह - देवियाँ भी थी हमारी देवियाँ ही सर्वया।"

भारतीय इतिहास में रामायण- महाभारत काल के पश्चात नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय होती गई। "उन पर अनगिनत निर्योग्ता थोपी जाती, बाल-विवाह, विधवाओं को भी जबर्दस्ती चिताओं में झोक देना पर्दा प्रथा के कारण लड़कियों को शिक्षा से वंचित कर देना, विधवाओं की अमंगलसूचक अभिशापित स्थिति विधवा - विवाह निषेध, अशिक्षा और अंधविश्वाशों में जकड़ी नारी को आधिकारिक पुरुषों का गुलाम बना दिया जाता था। लेकिन नारी को अपनी बुद्धि और बल पर भरोसा है। उसमें पुरुष के प्रति कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है अपितु निजी व्यक्तित्व एवं पारिवारिक दायित्व को प्रधानता देते हुए उसमें ध्येय निष्ठा का भाव है। नारी में गंभीर महत्व एवं करुणा का भाव निहित है तो दूसरी ओर वह अपनी बाधाओं और संकटों को दूर करने के लिए चंडी, दुर्गा, अम्बा का रूप में भी है।

समाज में शताब्दियों से नारी चेतना का यह फैलाव समाज के सम्पूर्ण परिवेश से जुड़ा हुआ है। समाज में नारी के माता पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी, सेविका परिचारिका तपस्विनी आदि अनेकानेक रूप में है। भारतीय समाज में नारी का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक हुआ है। आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से वह आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी बनी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय नारी को सभी प्रकार के अधिकार दिये गए जिससे उसने चूल्हा चौका का दायरा छोड़ कर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को जीवित किया है।

“नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वा स रजत - नाग - पग ताल में।
पीयूष श्रोत से बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में ।"5

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

नारी के अंतःकरण में कोमलता, करुणा, ममता, सहृदयता एवं उदारता की पाँच देव - प्रवृतियाँ सहज-स्वाभाविक रूप से अधिक है। इसलिए उसे 'देवी' शब्द अलंकार से सम्मानित किया जाता है। यदि यह बाहुल्य न होता तो वह पत्नी का समर्पणवरक, माता की जान जोखिम में डालने जैसी बलिदानी प्रक्रिया, बहन और पुत्री का अंतरात्मा को गुदगुदा देने वाली विशेषता कैसे संभव होती ? उसके इन दैवी गुणों ने ही उसे इस प्रकार का परमार्थपराण तपस्वी जीवन जी सकने की क्षमता प्रदान की है।

आज जिस नारी को हमनें घर की बंदिनी, पर्दे की प्रतिमा और पैर की जूती बनाकर रख छोड़ा है और जो मुक पशु की तरह सारा कष्ट, सार क्लेश विष घूंट की तरह पीकर नेह का अमृत ही देती है, उस नारी की सही स्वरूप तथा महत्व पर निष्पक्ष होकर विचार किया जाए तो अपनी ही आत्मा अपने धिक्कार को अब और अधिक नहीं सुनना चाहती। मानवता के नाते, सहधर्मिणी होने के नाते, समाज की उन्नति के नाते उसे उसका उचित स्थान दिया ही जाना चाहिए। अधिक दिनों उसके अस्तित्व, व्यक्तित्व तथा अधिकारों का शोषण राष्ट्र को ऐसे गर्त में गिरा सकता है जिससे निकल सकना कठिन हो जाएगा। अतः कल्याण तथा बुद्धिमता इसी में है की समय रहते चेत उठा जाए और अपनी इस भूल को सुधार ही लिया जा रहा है। नारी का सबसे बड़ा महत्व उसके जननी पद में निहित है। यदि जननी न होती तो कहाँ से सृष्टि का संपादन होता और कहाँ से समाज तथा राष्ट्रों की रचना होती। यदि माँ न हो तो कौन सी शक्ति होती जो संसार में अनीति एवं अत्याचार मिटाने के लिए शूरमाओं को धरती पर उतारती। यदि माता न होती तो यह बड़े - बड़े वैज्ञानिक प्रकांड पंडित, अप्रतिम साहित्यकार, दार्शनिक, मनीषी, महात्मा एवं महापुरुष किसकी गोद में खेल खेल कर धरती पर परदापन करते। नारी व्यक्ति , समाज तथा राष्ट्र की जननी ही नहीं, वह जगतजननी है। उसका समुचित सम्मान न करना अपराध है, पाप तथा अमनुष्यता है।

नारी गर्भ धारण करती, उसे पालती, शिशु को जन्म देती और तब तक, जब तक की वह अपने पैरों नहीं चल पाता और अपने हाथों नहीं खा पाता उसे छाती से लगाए अपना जीवन रस पिलाती रहती है। अपने से अधिक संतान की रक्षा एवं सुख-सुविधा में निरत रहती है। खुद गीले में सोती और शिशु को सूखे मे सुलाती है। उसका मल-मूत्र साफ करती है। उसको साफ सूत्र रखने में अपनी सुध-बुध भूली रहती है। इस संबंध में हर मनुष्य किसी न किसी नारी का ऋणी है। ऐसी दयामनी नारी का उपकार यदि तिरस्कार तथा उपेक्षा से चुकाया जाता है तो इससे बड़ी शर्म की बात और क्या हो सकती है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

नारी अपने विभिन्न रूपों में सदैव मानव जाति के लिए त्याग, बलिदान, नेह, श्रद्धा, धैर्य, सहिष्णुता का जीवन बिताती है। मानव जाति के लिए करतावयुक्त शुष्क जीवन की वह सरसता तथा उजड़ी ज़िंदगी की हरियाली मानी गई है। इसलिए नारी की गरिमा गिरने का अर्थ है अपनी उद्गम शक्ति को गिराना। जो अपनी जननी, भगिनी, दृष्टता और अपनी जीवन सहचरी की गरिमा को गिरा सकता है, उसकी स्वयं की गरिमा का फिर क्या आधार शेष रहता है। अविकसित माँ, असंस्कृत बहन, उपेक्षित बेटी और अपरिष्कृत मनोभूमि की पत्नी के साथ रहकर भी भला कोई व्यक्ति अपनी श्रेष्ठता का दंभ रखे, नारी के किसी भी रूप की गरिमा घटाने से मनुष्य को घाटा हो उठाना पड़ेगा। नारी के विकास में ही हमारा अपना हित सन्निहित है।

संदर्भ संकेत

1. डॉ. अर्चना शेरावत, समकालीन हिन्दी महिला कहानिकारों की कहानियों में नारी चेतना, पृ. सं. 56
2. डॉ. सुषमा शुक्ला, वैदिक वाड्मय में नारी पृ.सं. 41
3. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती पृ. सं. 17
4. कमलेश कटीरिया, नारी जीवन वैदिककाल से आज तक पृ. सं. 118
5. जयशंकर प्रसाद, कामायनी पृ. सं. 38